International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-03-2020; Accepted: 07-04-2020; Published: 23-04-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 65-67

पद्मावत: लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना

राजीव कुमार प्रसाद
हिंदी शोधार्थी, यु० जी० सी० नेट, ल० ना० मि० वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा लिखित ' पद्मावत ' प्रेमाख्यानक परम्परा का सबसे प्रसिद्ध एवं सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्य है इसके अन्तर्गत चित्तौड़ के राजा रतनसेन और सिंघल की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम, विवाह और विवाह के बाद के जीवन का वर्णन किया गया है। इस कथा का पूर्वार्द्ध कल्पना प्रधान है जबकि उत्तरार्द्ध में ऐतिहासिकता। पद्मावत मूल रूप से रोमांचक शैली का कथाकाव्य है, इस काव्य में प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, दर्शन, अध्यात्म, मौलिकता, रहस्यात्मकता और भारतीय संस्कृति का समग्र रूप देखने को मिलता है। यह वह काव्य है जिसके अन्तर्गत भारतीयता का आदर्श पूरी तरह देखने को मिलता है। पद्मावत के विभिन्न पात्र दार्शनिक तत्वों के प्रतीक हैं। इस दृष्टि से कुछ इसे रूपक काव्य भी मानते हैं। काव्य तत्व और भाव व्यंजना की दृष्टि से पद्मावत उच्चकोटि का काव्य है। सौन्दर्य वर्णन, प्रेम - वर्णन, संयोग, वियोग वर्णन , वीरता वर्णन , त्याग वर्णन और अनेक प्रकार के वर्णन इस काव्य के अन्तर्गत देखे जा सकते हैं। भारतीय कथा काव्य की प्रायः सभी रूढ़ियों का वर्णन सफलतापूर्वक इसके अन्तर्गत किया गया है। दोहा , चौपाई में लिखा गया अवधी भाषा से सजा हुआ पद्मावत हिन्दी सूफी काव्य परम्परा का महत्तम ग्रन्थ है ।
प्रेमाख्यानक सूफी काव्यों का प्रमुख लक्ष्य भारतीय जन - जीवन के चित्र के साथ प्रकारांतर से सूफी मत एवं साधना का प्रचार करना भी था। अपने रचनाओं के माध्यम से वे हिन्दू समाज में अपने सिद्धान्तों और साधना - पद्धतियों पर प्रचार करने में सफल भी हुए। सूफी साधक कवि होने के साथ भक्त भी थे। अतः अपने काव्यों में प्रेम को ईश्वर प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन बताया है। जायसी इस दिशा में सबसे अधिक सफल हुए, उनका प्रेरणा स्रोत सूफी सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त निर्देशन के लिए उन्होंने सुप्रसिद्ध भारतीय लोक कथाओं का आश्रय लिया और बखूबी अपने लक्ष्य में सफल रहे। ऐसे कवियों को भक्त श्रेणी में ही परिगणित किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इस धारा के कवि - भक्तों का वर्णन निर्गुण प्रेमाश्रयी शाखा के अन्तर्गत किया है ।

मूल शब्द: पद्धतियों, निर्गुण, प्रेमाश्रयी, इश्क मजाजी, इश्क हकीकी, माधुर्य, परिमार्जन, आलम्बन, सांसारिक, अनहलक, प्रतिभासित, ज्योति, सृष्टि, अपूर्व, सुषमा, सुन्दरता, अन्तरायों, लोकदृष्टि, पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध, अप्रस्तुत, साक्षात्कार, अन्योक्ति, समासोक्ति, विश्वबन्धुत्व, सशक्तिकरण, मोक्ष, नूर, मर्मस्पर्शी

प्रस्तावना

सूफी मत का आधार ' प्रेम ' है। यह प्रेम एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसका ध्येय आनन्द है। अन्तरायों (विघ्नों) के कारण रति व्यापार में जितनी भी बाधा पड़ती है, काम वासना उतनी ही परिमार्जित हो, प्रखर प्रेम का रूप धारण करती है। इसी परिमार्जन से रति - भाव ' प्रेम पद ' को प्राप्त होता है। इसी से सूफी ' इश्क मजाजी ' (लौकिक प्रेम) को ' इश्क हकीकी ' की सीढ़ी समझते हैं और किसी बुत से दिल लगाने में नहीं हिचकते। भारत में परमात्मा के साकार रूप को खड़ा कर जिस माधुर्य भाव का प्रचार किया गया, उसी का प्रचार शामी जातियों में निराकार के आलम्बन के ' मादन भाव ' में हुआ । ' मादन भाव ' और ' माधुर्य भाव ' में थोड़ा अन्तर है। माधुर्य मूल में रति की मधुरता है। भारतीय माधुर्य का आलम्बन व्यक्त भगवान है और भक्त रति का अवतार। सूफियों की भक्ति का आधार ' मदन ' या ' काम ' है। एक मधुर कोमल और मंद है तो दूसरा उन्मत्त, भीषण एवं उग्र। मानव मात्र के दो उपास्य आनन्द और अमृत में सूफी केवल प्रथम की ओर झुके। अमृत की उन्हें कामना नहीं। कारण यह था कि इस्लामी धारणा के अनुसार उनका यह जन्म प्रथम और अन्तिम है। सामान्य मुस्लिम अल्लाह की आराधना स्वर्ग सुख के लिए करता है, पर सूफी अल्लाह से संयोग के लिये। सूफी उनके लावण्य पर मरते हैं। वह भी उन्हें भुलाने के लिये कभी बुत बनता है, कभी कण - कण में झाँकता फिरता है। रसूलों के जगह आप ही उतर कर फल पत्तों में जलवा दिखाता है और परम प्रेम की बांसुरी बजाता है। देखते देखते आँखों के सामने ही वह हृदय में समा जाता है। निश्चिय ही अल्लाह की अर्श कुर्सी सूफियों के हृदय में है, बाहर या बहिश्त में नहीं। हृदय में प्रेम की पीर उदय होने पर साधक अपने अहंभाव और समस्त सांसारिक वासनाओं का परित्याग कर ब्रह्म के साथ एकाकार हो जाता है। यही ' अनहलक ' (अहं ब्रह्मास्मि) की स्थिति होती है। सूफी समस्त विश्व में ब्रह्म (खुदा) की झलक देखता है। वह ईश्वर को जगत के बाहर भी और भीतर भी दोनों रूपों में लीन मानता है। समस्त विश्व के कण - कण में उसी का सौन्दर्य प्रतिभासित है और सूफी उसी सौन्दर्य के दर्शन कर उसी में लीन हो जाना चाहता है।
सूफी काव्यों में मलिक मुहम्मद जायसी के ' पदमावत् ' अथवा ' पद्मावती ' का स्थान श्रेष्ठ है। इसमें चित्तौड़ के राजा रतनसेन और सिंहल की राजकुमारी पद्मावती को कथा वर्णित है। राजा पद्मावती द्वारा भेजे गए शुक् से उसका सौन्दर्य सुनकर मूर्छित हो जाता है और होश में आते ही राजपाट और अपनी रानी नागमती से विमुख हो अपने साथियों सहित पद्मावती को पाने के लिये निकल पड़ता है और सात - समुद्र पार कर सिंहल द्वीप पहुँचता है। अनेकानेक कठिनाइयों के बाद पद्मावती को पाने में सफल होता है। काफी दिन रहने के बाद पहली रानी नागमती का करुण संदेश पाकर पद्मावती को साथ ले अपने राज्य में लौट आता है। अलाउद्दीन पद्मावती के सौन्दर्य पर मोहित हो चित्तौड़ पर घेरा डालता है। अन्त में राजा मारा जाता है और दोनों रानियाँ उसके साथ सती हो जाती हैं। जायसी ने ' पद्मावत ' में रचना शैली, कथानक कहने का ढंग और वातावरण भारतीय प्रेमाख्यानों के अनुरूप ही रखा है। लेकिन जहाँ तक चिन्तन धारा का प्रश्न है, उन्होंने सूफी विचारधारा को अपनाया। इसमें सबसे बड़ी सुविधा उन्हें यह हुई कि सूफी विचार धारा का बहुत सी बातों में भारतीय विचार धारा से साम्य है। सूफियों का कहना है कि परमात्मा को जब सृष्टि के द्वारा अपने आपको अभिव्यक्त करने की इच्छा हुई तब परमात्मा ने अपनी ही ज्योति का निर्माण किया। जिसे ' नूरे मुहम्मद ' या ' नूरे अहमद ' कहते हैं। सूफियों का यह भी कहना है कि परमात्मा स्वयं उस ज्योति पर मुग्ध हो गया और उसी ज्योति के लिये सृष्टि की रचना की। इस प्रकार से यह ज्योति ही सृष्टि का आदि कारण है। इसी बात को जायसी ने निम्न पंक्तियों में स्पष्ट किया है-

कीन्हेस पुरुष एक निरमरा। नाऊँ मुहम्मद पूनिउँ करा।।
प्रथम जीति विधि तेहि कै साजी। ओ तेहि प्रीति सृष्टि उपराजी।।

यो तो जायसी ने कई ग्रंथ लिखे हैं, पर ' पद्मावत ' उनकी कीर्ति का अक्षय आधार है। उनका हृदय प्रेम की पीर से भरा हुआ था। इस काव्य में उनकी उन पीर की मार्मिक व्यंजना हुई है। क्या लोक पक्ष और क्या आध्यात्मिक पक्ष दोनों में उनकी गूढ़ता, गंभीरता, सरसता विलक्षण है। अतः यह निःसंकोच यह कहा जा सकता है कि पद्मावत हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा का सर्वश्रेष्ठ प्रौढ़ ग्रंथ - रत्न है।

पद्मावती की कथा भारत की चिरपरिचित कथा है। जायसी ने उसे लोक - जीवन तथा साहित्य में प्रचलित कथाओं के माध्यम से अपने आध्यात्मिक संदेश का विमोह वाहन किया है। उन्होंने पद्मावती की अपूर्व सुषमा और सुन्दरता द्वारा परम तत्व के विराट रूप का हृदयग्राही चित्रण किया है-

सरवर तीर पदमिनी आई। खोपा छोरि केसि मुकलाई।।
ओनयी घटा परी जग छाहां। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ।।
बेनि छोरि झार जो बारा। सरग पतार होई अंधियारा।।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस रूप वर्णन की विशेषताओं पर लिखा है "केशों की दीर्घता, सघनता और श्यामलता के वर्णन के लिए परम्परा से प्रचलित पद्धति के अनुसार सादृश्य पर जोर न देकर कवि ने उसे लोक व्यापी प्रभाव की ओर संकेत किया है।" पद्मावती में ऐसे अनेक स्थल हैं जो जायसी की इस विराट कल्पना को प्रत्यक्ष कर देते हैं। ' पद्मावती ' के रूप का प्रभाव देखिये-

जग डोल डोलत नैनाहा। उलटि अडार जाहिं फल माहाँ।।
जबहिं फिरहिं गगन गहि बोरा। अस वै भँवर चक्र के जोरा।।
उन बानन अस को न मरा। बेधि रहौ सगरौं संसारा।।
रवि - ससि - नखत दिपहिं ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती।।

रूप वर्णन और अप्रस्तुत - विधान का जहाँ तक सम्बन्ध है, बहुत कम कवि जायसी की समता कर सकते हैं। 'पद्मावती' के पूर्वार्ध में एकान्तिक प्रेम का बड़ा ही जीवन्त चित्रण हुआ है। नागमती के वियोग का वर्णन तो हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। लगता है कि जायसी ने नागमती के कण्ठ में अपनी ही वेदना भर दी है। ' पद्मावत ' में सर्वत्र कल्पना और सम्भावना का सौन्दर्य दर्शनीय है। तत्कालीन भारतीय लोक - जीवन का निदर्शन तो उसमें और भी सौन्दर्य की वृद्धि कर देता है। अवध की संस्कृति अपने भव्य और प्राञ्जल रूप में जीवन्त हो उठी है। समाज के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। क्या विवाह, क्या भजोन, क्या मुस्लिम आक्रमण, क्या जौहर, क्या राजपूती शौर्य, क्या विलासिता, क्या प्रथायें और लोक विश्वास, क्या सामाजिक कृत्य या उत्सव, क्या दुर्ग और नगर, क्या योग पंथ और क्या प्रेम पंथ सभी का एक सजीव संश्लिष्ट चित्र जायसी ने उपस्थित कर दिया। जायसी का रूप वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। पद्मावती के रूप वर्णन के प्रसंग सादृश्यमूलक अलंकारों के साथ अनेक प्रकार की परम्परा - प्रचलित लोकदृष्टि और नवीन मौलिक उद्भावनाओं का काव्य सौन्दर्य अनुपम है। प्रकृति चित्रण की दृष्टि से काव्य का महत्व अधिक बढ़ जाता है। काव्योत्कृष्टता के साथ अद्वैत भावना और हठ योग पर आधारित रहस्यवाद के साथ सूफी सिद्धान्तों व कलापूर्ण निदर्शन उनके विलक्षण कौशल का परिचायक है।

अवधी भाषा में रचित उनका महाकाव्य ' पद्मावत ' सूफी काव्य धारा का प्रतिनिधि ग्रन्थ है जिसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का चित्रण किया गया है। सूफी कवियों ने हिन्दू घरों में प्रचलित लोकप्रसिद्ध प्रेमगाथाओं को अपनी काव्य-वस्तु बनाया तथा लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की। रत्नसेन यहां जीवात्मा का प्रतीक है और पद्मावती परमात्मा का। सूफी काव्य परम्परा के सभी ग्रन्थों में प्रेम की महत्ता स्वीकार की गई है। ये कवि ' प्रेम ' को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानते हैं और ' इश्क मजाजी ' से ' इश्क हकीकी ' तक पहुंचने का सन्देश देते हैं। सूफी मत में प्रेम का विशेष महत्व है।

जायसी की मान्यता है कि इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) के द्वारा इश्क हकीकी (ईश्वरीय प्रेम) को पाया जा सकता है। रत्नसेन का पद्मावती के प्रति प्रेम इसी प्रकार का है। प्रेमी के हृदय में प्रिया के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए चित्र दर्शन, स्वप्न दर्शन या सौन्दर्य प्रशंसा का आश्रय लिया जाता है तथा प्रेमी प्रिया को पाने के लिए सर्वस्व त्यागकर विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ अन्त में उसे प्राप्त कर लेता है। हीरामन तोते के द्वारा पद्मावती के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर राजा रत्नसेन उसे पाने को व्याकुल हो गया और सिंहलद्वीप जाकर उसने अन्ततः अनेक कष्ट झेलने के उपरान्त पद्मावती को प्राप्त कर लिया।

जैसे किसी पथिक को अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कुछ मन्जिलों को पार करना पड़ता है, वैसे ही जीवात्मा को हक (ईश्वर) तक पहुंचने के लिए चार मुकामात (मन्जिलें) पार करनी होती है, जिनके नाम सूफी मत के अनुसार हैं - शरीअत, तरीकत, हकीकत, और मारिफत। इन्हें पार करके ही वह परमात्मा से एकाकार हो जाती है। जायसी ने ' पद्मावत ' में इसी सूफी प्रेम पद्धति को अपनाया है। पद्मावती के अनुपम रूप सौन्दर्य की प्रशंसा से प्रभावित राजा रत्नसेन योगी बनकर सिंहलद्वीप जाता है। मार्ग में समुद्र यात्रा के समय अनेक विघ्न आते हैं, किन्तु उन्हें पार करता हुआ वह अन्ततः पद्मावती को पा लेता है। लौटते हुए रास्ते में फिर विघ्न आते हैं। पद्मावती उससे बिछुड़ जाती है किन्तु प्रेम की दृढ़ता के कारण उनका पुनर्मिलन होता है। चित्तौड़ लौटने पर राघवचेतन की दुष्टता के कारण अलाउद्दीन बादशाह पद्मावती को पाने के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण कर देता है तथा राजा रत्नसेन को बन्दी बनाकर दिल्ली ले जाता है, किन्तु गोरा - बादल की तत्परता से कारागार से मुक्त होकर चित्तौड़ लौट आता है। चित्तौड़ लौटकर राणा वीरपाल से उसका युद्ध होता है जिसमें वह वीरगति को प्राप्त करता है तथा राजा रत्नसेन की दोनों रानियां- नागमती एवं पद्मावती उसके साथ सती हो जाती हैं। इस प्रकार राजा रत्नसेन रूपी आत्मा ' फना ' होकर ' अनहलक ' की अधिकारिणी बनकर पद्मावती रूपी परमात्मा से एकाकार हो जाती है। जायसी ने पद्मावती को परमात्मा मानकर उसके रूप - सौन्दर्य की अलौकिक छटा संसार में व्याप्त दिखाई है। संसार में जो कुछ सुन्दर है सब उसी का प्रतिरूप है।

रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती।
रतन पदारथ मानिक मोती ॥

जायसी का मत है कि प्रेम की चिनगारी यदि हृदय में पड़ गई और उसे सुलगाते बन पड़ा तो उस अद्भुत अग्नि से सारे लोक विचलित हो जाते हैं-

मुहमद चिनगी प्रेम के सुनि महि गगन डेराइ।
धनि विरही औ धनि हिया जहें अस अगिनि समाइ।।

भगवत्प्रेम की यह चिनगारी गुरु ही हृदय में डाल पाता है, किन्तु उसे सुलगाना ' साधक ' का काम है। गुरु तो ईश्वर का आभास मात्र कराता है, किन्तु भावना के उत्तरोत्तर उत्कर्ष द्वारा शिष्य उसे पूर्णता तक ले जाता है। प्रेमी को प्रिय के साक्षात्कार के अतिरिक्त और कोई कामना नहीं होती है। सच्चा प्रेम क्या है इसका वर्णन हीरामन तोते के मुख से भी जायसी ने कराया है। सच्चा प्रेम एक बार उत्पन्न होकर फिर समाप्त नहीं होता। यद्यपि उसमें दुःख झेलना पड़ता है पर जिस पर एक बार प्रीति बेलि छा गई उसके हृदय में और किसी भाव के लिए स्थान ही नहीं रहता। निश्चय ही जायसी की प्रेम भावना अत्यन्त सात्विक है तथा वह लौकिकता से प्रारम्भ होकर अलौकिकता की ओर अग्रसर हुई है। जायसी ने प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित करते उसे ईश्वर का रूप सिद्ध किया है। जायसी ने फारसी प्रेम पद्धति का आधार ग्रहण करते हुए प्रेम की पीर अर्थात् विरह वेदना का अत्यन्त मार्मिक चित्रण ' पद्मावत ' में किया है। नागमती की विरह वेदना सम्पूर्ण संसार में व्याप्त दिखाई गई है। जायसी की प्रेम पद्धति में लौकिक कथा के बीच - बीच में आध्यात्मिक संकेत होने के कारण यह काव्य ग्रन्थ एक ' समासोक्ति ' है। वे

सिंहलगढ़ को मानव शरीर का प्रतीक बताते हैं जिसमें नौ चक्रों का विधान है। यही नहीं सम्पूर्ण कथा का आध्यात्मिक परिहार भी इसमें किया गया है-

तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि पदमिनि चीन्हा।।
गुरू सुआ मोहि पन्थ देखावा। बिनु गुरू जगत को निरगुन पावा।।
नागमती यह दुनिया धन्धा। बांचा सोइ न यह चित बन्धा।।
राघव दूत सोई शैतानू। माया अलाउद्दीन सुलतानू।।

इन पंक्तियों में पद्मावती को बुद्धि का प्रतीक, चित्तौड़ को शरीर, मन - राजा रत्नसेन, हृदय - सिंहलद्वीप, गुरु हीरामन तोता, संसार – नागमती, शैतान - राघवचेतन और माया - अलाउद्दीन है। यद्यपि इन प्रतीकों के आधार पर सम्पूर्ण कथा की व्याख्या नहीं की जा सकती, किन्तु इतना निश्चित है कि जायसी ने जानबूझकर कथा के बीच में अप्रस्तुत अर्थ का समावेश करते हुए आध्यात्मिक संकेत दिए हैं। इसीलिए सम्पूर्ण कथा को अन्योक्ति न मानकर समासोक्ति कहना समीचीन है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पद्मावत् के बारे में लिखा है- " जायसी की अक्षय कृति का आधार है ' पद्मावत, जिसके पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जायसी का हृदय कैसा कोमल और प्रेम की पीर से भड़ा हुआ था। क्या लोकपक्ष में, क्या अध्यात्म पक्ष में दोनो ओर उसकी गृढ़ता, सरसता और गंभीरता विलक्षण दिखलाई देती है। यह कहना सच होगा कि प्रेमगाथा की परंपरा में अपनी इस कृति में जायसी ने इतिहास और कल्पना के सुन्दर समन्वय से यह अत्यन्त उत्कर्ष का महाकाव्य दिया है। यह रोमांचक शैली में प्रस्तुत कथा - काव्य है।

भारतीय निर्गुण साधना के संतों ने पात्रों और घटनाओं के लिए जिन प्रतीकों का प्रयोग किया है, जायसी के ये प्रतीक वैसे ही हैं। यहाँ साधक का मन रत्नसेन है, उसका शरीर यानी सुख विलास चित्तौर है। इस सुख - भोग रूपी चित्तौर को त्यागने के बाद गुरू अर्थात् हीरामन सुग्गा के निर्देश से सात्विक ज्ञान (पद्मावती) उपलब्ध होता है जिससे अन्ततः वह मोक्ष को प्राप्त करता है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के कथनानुसार, - " जायसी के संकेतों का यथार्थ रूप में ग्रहण करते हुए उनका अनुगमन किया जाये तो पद्मावत का समस्त रूपकत्व सर्वथा संगत एवं निर्दोष सिद्ध होता है, किन्तु उस स्थिति में वह सूफी साधना का प्रतिपादक न होकर भारतीय मोक्ष साधना का ही व्यंजक सिद्ध होता है।"

निष्कर्ष

प्रेमाख्यानों का और उनके कवियों की देन का हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। परम्परा के प्रति एकनिष्ठ प्रेम से सम्पूर्ण मानवीय संकीर्णता दूर की जा सकती है और इस प्रकार व्यापक विश्वबन्धुत्व की स्थापना हो सकती है जिसे हम 21 वीं सदी के शब्दों में वैश्वीकरण या ग्लोबलाइजेशन कह सकते हैं।

ईश्वरीय प्रेम और सांसारिक प्रेम में कोई अन्तर नहीं है। व्यक्तिगत सुख - दुखः अथवा राग - द्वेष से ऊपर उठकर प्रेम भी एक अपूर्व रंग पकड़ता है तो इश्क मजाजी (शारीरिक प्रेम) भी इश्क हकीकी (पारमात्मिक प्रेम) में परिणत हो जाता है। आज की वर्तमान सदी में जिस नारी सशक्तिकरण पर बल दिया जा रहा है, सूफी कवियों ने भी अपने प्रेमाख्यानों में प्रेमपात्र का स्थान प्रधानतः नारी को ही दिया है। नारी नूर का प्रतीक है जो सारे विश्व का मूल स्रोत है और जिसके अभाव में सारा मानव जीवन सूना है। सूफी कवियों ने नारी को अपनी प्रेम - साधना के साध्य रूप में स्वीकार किया है जिस कारण वह इनके यहाँ न तो मध्यकालीन नारी भोग्य वस्तु है और न ही आधुनिककालीन चमकते - दमकते कृत्रिम सौन्दर्य का आकर्षण। उन्होने नारी को बहुत कुछ स्वतंत्र रूप देकर चित्रित किया है और वैवाहिक जीवन के प्रभावों से युक्त ठहराया है।

सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों में पौराणिक परंपरा का ख्याल रखते हुए ऐसे नायक - नायिकाओं की चर्चा की है जिन्हें हम अलौकिक कह सकते हैं किन्तु उन्होंने इस पर जो रंग चढ़ा दिया है वह ठेठ लौकिक जीवन के प्रसंगों का है, जिससे इस बात का पूरी तरह स्पष्टीकरण हो जाता है कि प्रेम में अपार शक्ति है जो बड़े - से - बड़े व्यक्तित्व को झुका देती है। सूफी प्रेमाख्यानों की सर्वोपरि विशेषता है उनके द्वारा लोकपक्ष का सजीव चित्रण। इनमें जादू - टोना , यंत्र - तंत्र, सामाजिक अन्ध - विश्वास , विभिन्न लोकोत्सवों एवं लोक - व्यवहारों की ऐसी प्रस्तुति मिलती है कि पूरी कथा का घटना - प्रवाह विशुद्ध लौकिक बन जाता है।

जायसी के संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- "अपनी कहानियों द्वारा इन्होंने प्रेम का शुद्ध मार्ग दिखलाते हुए उन सामान्य जीवन दशाओं को सामने रखा जिनका मनुष्य मात्र के हृदय पर प्रभाव दिखाई पड़ता है । हिन्दू हृदय और मुसलमान दोनों आमने - सामने करके अजनबीपन मिटानेवालों में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा। इन्होंने मुसलमान होकर हिन्दुओं की कहानियाँ हिन्दू की ही बोली में पूरी सहृदयता से कहकर उनके जीवन की मर्मस्पर्शी अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामंजस्य दिखा दिया। कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास मात्र दिया था। प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी थी। वह जायसी द्वारा पूरी हुई।"

संदर्भ सूची

1. त्रिवेणी - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. पद्मावत का काव्य सौन्दर्य - प्रो. शिव सहाय पाठक
3. जायसी और उनका पद्मावत् - हजारी प्रसाद द्विवेदि
4. महाकवि जायसी और उनका काव्य - डा. इक़बाल अहमद
5. जायसी ग्रन्थावली - नागरी प्रचारिणी सभा